Tc.No.: GUJHIN00722

दैनिक

क्रांति समय

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480

E-mail: krantisamay@gmail.com

सूरत, वर्ष: 1 अंक: 38, शुक्रवार, 02 मार्च 2018, पेज: 4, मुल्य 1 रु.

ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात

सार समाचार

मेट्रो ट्रेन के आगे कूद कर दी जान

नई दिल्ली (एजेंसी)। चांदनी चौक मेट्रो स्टेशन पर बुधवार सुबह एक युवक ट्रेन के सामने कूद गया। गंभीर रूप से घायल युवक को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस उपायुक्त पंकज सिंह के मुताबिक बुधवार सुबह लगभग सवा ग्यारह बजे चांदनी चौक मेट्रो स्टेशन पर कैलाश जोशी नामक युवक ने गुरुग्राम जाने वाली ट्रेन के सामने छलांग लगा दी। चालक ने इमेरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन को रोकने की कोशिश की, लेकिन मेट्रो की चपेट में आकर युवक बुरी तरह घायल हो गया। आनन-फानन में मेट्रो कर्मियरे व सीआईएसएफ के जवानों ने जख्मी युवक को उपचार के लिए ट्रामा सेंटर पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। कैलाश जोशी बुराड़ी इलाके में सपरिवार रहता था और घर के पास ही परचून की दुकान चलाता था। जांच में पता चला कि मानसिक रूप से परेशान कैलाश अविवाहित था और पिछले दो साल से उसका उपचार इहबास अस्पताल में चल रहा था। मृतक की जेब से एक सुसाइड नोट मिला, जिसमें उसने अपनी बीमारी का जिक्र किया है।

जल्दबाजी से नहीं मिला न्याय : हाईकोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने 14 साल के लड़के से कुकर्म की कोशिश और हत्या के एक मामले में 24 गवाहों में 22 से जल्दबाजी में गवाही कराने पर निचली अदालत के प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि जल्दबाजी दिखाने से इंसाफ नहीं हो पाने का यह नायाब उदाहरण है। उच्च न्यायालय ने निचली अदालत की ओर से आनन-फानन में एक ही दिन में 22 गवाहों की गवाही की कराने की प्रक्रिया की आलोचना करते हुए कहा कि वह यह समझ नहीं पा रहा कि इस तरह के मामलों में अभियोजन सबूत पर गौर करने के लिए निचली अदालत ने जल्दबाजी क्यों दिखायी और इस वजह से न्याय नहीं हुआ। न्यायमूर्ति एस मुरलीधर और न्यायमूर्ति आई एस मेहता की पीठ ने 2012 में उत्तर-पश्चिम दिल्ली में नाबालिग का अपहरण, कुकर्म की कोशिश और हत्या के अपराध में दो लोगों को दोषी करार देने और सजा सुनाए जाने के निचली अदालत के अक्टूबर 2014 के फैसले को खारिज कर दिया। अदालत ने दोनों को बरी भी कर दिया। पीठ ने कहा,''अदालत को याचिकाकर्ताओं (दोषियों) के वकील की दलील में दम लगता है कि आरोपियों के प्रति पूर्वाग्रह के कारण निचली अदालत के न्यायाधीश ने त्वरित प्रक्रिया अपनायी।' अदालत ने कहा,''अदालत यह नहीं समझ पाई कि न्यायाधीश ने मामले में अभियोजन के सबूतों पर जल्दबाजी क्यों की और उन्हें इसका अंदाजा क्यों नहीं रहा कि इससे इंसाफ नहीं हो पाएगा।' अदालत ने दोनों लोगों को संदेह का लाभ दिया और मामले में उन्हें बरी कर दिया। पीठ ने कहा,'' निचली अदालत के न्यायाधीश ने जिस तरह मुकदमा चलाया उस वजह से न्याय नहीं हो पाया।'

सीलिंग रोकने के लिए मॉनिटरिंग कमेटी से मिले नेता विपक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी के कारोबारियों को सीलिंग से राहत दिलाने के लिए नेता विपक्ष विजेंद्र गुप्ता ने बुधवार को मॉनिटरिंग कमेटी के सदस्यों से मुलाकात की। मॉनिटरिंग कमेटी के ऑफिस में पहुंचकर गुप्ता ने डीडीए के निर्णयों से सदस्यों को अवगत कराया और निर्णयों की प्रतियां भी सौंपी। इस बैठक में कमेटी के तीनों सदस्य केजे राव, डॉ भूरेलाल एवं सोम झिंगन भी थे। मुलाकात के दौरान उन्होंने सदस्यों से सीलिंग रोकने का भी आग्रह किया। गुप्ता के साथ विधायक ओपी शर्मा व पार्षद वीना बिरमानी भी थीं। मॉनिटरिंग कमेटी से मुलाकात के बाद नेता विपक्ष ने उम्मीद जतायी है कि कमेटी नियमों के तहत जल्द ही कार्रवाई करेगी। उन्होंने दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) की बोर्ड बैठक में लिए गए निर्णयों से सदस्यों को अवगत करा दिया है। गुप्ता ने मॉनिटरिंग कमेटी के सदस्यों को लोगों के सुझावों एवं बोर्ड ऑफ इनक्रायरी एंड हियरिंग की रिपोर्ट भी सौंपी। मॉनिटरिंग कमेटी के सदस्यों से आग्रह किया कि वह व्यापारियों, दुकानदारों, औद्योगिक इकाईयों एवं गोदामों को सीलिंग से राहत दिलाएं। सीलिंग को रोकने की प्रक्रिया को हरी झंडी मिल गई है और पूरा मामला सकारात्मक है। मानवीय आधार पर सीलिंग रोकनी चाहिए। मॉनिटरिंग कमेटी के सदस्यों के साथ बैठक के बाद उन्होंने बताया कि सदस्यों ने आास्त किया है। कानूनी रूप से जो भी संभव होगा, वह किया जाएगा।

पांच अस्पतालों के रेजिडेंट डाक्टर बेमियादी हड़ताल पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की राजधानी दिल्ली के दो मेडिकल कॉलेजों से संबंद्ध पांच अस्पतालों के करीब चार हजार से अधिक रेजिडेंट डाक्टर और मेडिकल स्टूडेंट्स बुधवार से बेमियादी हड़ताल पर चले गए। ऐसे में बुधवार को पूरे दिन इन अस्पतालों में स्वास्य सेवाएं प्रभावित रही जिससे मरीजों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज से संबद्ध लोकनायक अस्पताल, जीबी पंत, गुरु नानक नेत्र चिकित्सालय, सुश्रुत अभिघात केंद्र के रेजिडेंट डाक्टरों ने जहां सुरक्षा बढ़ाने की मांग को लेकर स्वास्य सेवाएं बाधित की वहीं वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज से संबद्ध सफदरजंग अस्पताल के रेजिडेंट डाक्टर और स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे मेडिकल स्टूडेंट्स ने स्नातकोत्तर (पीजी) की सीटें कम करने के विरोध में हड़ताल की। दिन भर हड़ताल पर रहने के बाद देर सायं दोनों मेडिकल कॉलेजों की हुई बैठक में बृहस्पतिवार को भी हड़ताल जारी रखने का फैसला लिया गया। डाक्टरों का तर्क है कि सरकार और अस्पताल प्रशासन की मनमानी अब हम बर्दाश्त नहीं करने वाले हैं। सनद रहे कि लोक नायक अस्पताल में मंगलवार को महिला मरीज के परिजनों के साथ मारपीट हो गई थी। इस घटना में डा. श्याम सुंदर के नाम की हड्डी टूट गई थी और डा. संजय गौतम के हाथ में प्लैस्टर आया था। जब तीसरे डाक्टर ने बीच बचाव की कोशिश की तो उसे भी पीटा गया।

लोक नायक अस्पताल में मारपीट के विरोध में बुधवार को प्रदर्शन करते रेजिडेंट डाक्टर(बाएं)। लोक नायक अस्पताल के बाहर उपचार के इंतजार में रोगी।

पंद्रह सौ सर्जरियां प्रभावित :

दो मेडिकल कॉलेजों से जुड़े पांच अस्पतालों में करीब 1500 से अधिक छोटी-बड़ी सर्जरियां प्रभावित हुई। दिल्ली सरकार और केंद्र सरकार के शीर्षस्थ अधिकारियों द्वारा रुचि नहीं लेने से हड़ताल दूसरे दिन भी जारी रहेगी। जिसका खमियाजा मरीजों को भुगतना पड़ेगा। इन अस्पतालों से प्राप्त रिकार्ड के अनुसार अनुमान है हर दिन इन अस्पतालों में करीब 1500 पूर्व नियोजित छोटी-बड़ी सर्जरी की जाती हैं। इसके अलावा इन अस्पतालों की इमरजेंसी में आने वाले मरीजों के 400 से 500 तुरंत सर्जरियों की संपन्न की जाती है। जो हड़ताल की वजह से टाल दी गई। दूसरे अस्पतालों में मरीजों का दबाव बढ़ने लगा है।

अधिकारी और मंत्री के बीच फंसा मामला :

बुधवार को एलएनजेपी के रेजिडेंट डॉक्टरों के समर्थन में तीन और अस्पताल के रेजिडेंट डॉक्टरों के उतरने के बाद बुधवार को सचिवालय में दिन भर बैठकों का दौर चलता रहा। डॉक्टरों के अनुसार स्वास्य विभाग के प्रिंसिपल सेक्रेटरी और स्वास्य मंत्री सत्येंद्र जैन ने डॉक्टरों से अलग अलग मीटिंग की, लेकिन दोनों ही मामले के समाधान के बजाए दूसरों को इसका जिम्मेदार ठहराते रहे। इसकी वजह से कोई निष्कर्ष नहीं निकल सका

दो चरणों की बैठक बेनतीजा :

उधर सफदरजंग अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डा. राजेंद्र शर्मा की अगुवाई में हड़ताली डाक्टरों के साथ पहली बैठक अपराह्न 2 बजे हुई। दूसरी बैठक वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य एवं प्रशासनिक अधिकारी के मध्य हुई। इसमें मेडिकल स्टूडेंट्स ने कहा कि इस हालत के लिए प्राचार्य जिम्मेदार है। अत: हम उनकी बर्खास्ती या तबादले की मांग करते हैं। साथ ही सरकार से मांग की वह स्नातकोत्तर परीक्षा में सीट बढ़ाने के लिए जल्द घोषणा करे।

»» उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग पर मनमानी का आरोप,

स्क्रीनिंग में पास युवक को इंटरव्यू में नहीं बुलाया

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की भर्तियों में अनियमितता के मामले कम होने का नाम नहीं ले रहे। सीबीआई के गोविन्दपुर स्थित कैंप कार्यालय में शिकायत करने पहुंचे एक अभ्यर्थी का आरोप है कि सीधी भर्ती में स्क्रीनिंग परीक्षा पास करने के बाद भी उसे इंटरव्यू के लिए आयोग का बुलावा पत्र नहीं आया। जब अभ्यर्थी आयोग पूछताछ करने गया तो पता चला कि इंटरव्यू समाप्त हो चुका है।

अभ्यर्थी को आयोग से यह बताया गया कि उसके ई-मेल तथा मोबाइल पर इंटरव्यू की जानकारी दी गई थी, जबकि अभ्यर्थी का दावा है कि उसे कोई सूचना नहीं मिली।

अभ्यर्थी ने अपनी शिकायत में इस बात का उल्लेख किया है कि उसके उस समय के ई-मेल तथा मोबाइल मैसेज की सीबीआई जांच करे।

गाजीपुर से पति-पत्नी भी शिकायत करने आए थे। दोनों ने पीसीएस 2013 से 2015 तक का इंटरव्यू दिया है। उनका आरोप है कि स्केलिंग की आड़ में जहां मुख्य परीक्षा में छेड़छाड़ हुई है, वहीं इंटरव्यू में सभी वर्ष में न्यूनतम अंक प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त सीधी भर्ती में भेदभाव के शिकार कई अभ्यर्थी आए।

याचिका खारिज होने पर उड़ाए अबीर-गुलाल

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की पांच साल की परीक्षाओं की सीबीआई जांच के खिलाफ दाखिल याचिका बुधवार को हाईकोर्ट से खारिज होने के बाद प्रतियोगी छात्रों ने जश्न मनाया। गोविन्दपुर स्थित सिंचाई विभाग के गेस्ट हाउस में बने सीबीआई के कैम्प कार्यालय पर छात्रों ने एक-दूसरे को अबीर-गुलाल लगाया और मिठाई खिलाकर बधाई दी। इसके अलावा मम्फोर्डगंज फव्वारा चौराहा, सलोरी और अल्लापुर आदि इलाकों में प्रतियोगी छात्र संघर्ष समिति के सदस्यों ने जश्न मनाया। सीबीआई कार्यालय पर शिकायत लेकर पहुंचे छात्रों ने भी होली खेली। अवनीश पांडेय, शांतनु राय, दिनेश तिवारी, गिरिजेश सिंह, मनीष पांडेय, प्रेम प्रकाश सिंह आदि ने इसे प्रतियोगियों के साथ हुई नाइंसाफी के खिलाफ संघर्ष की एक और जीत बताई।

दो से चार मार्च तक बंद रहेगा सीबीआई का कैम्प कार्यालय

गोविन्दपुर स्थित सिंचाई कार्यालय के गेस्ट हाउस में बना सीबीआई का कैम्प कार्यालय 2 से 4 तक बन्द रहेगा। इस दौरान शिकायत नहीं ली जाएगी।

शाहजहांपुर : दरोगा की बेटी ने फांसी लगाकर जान दी

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर पुलिस लाइन में रह रहे दरोगा अमर सिंह की 16 साल की बेटी आयुशी ने बुधवार रात फांसी लगाकर जान दे दी। आयुषी शाहजहांपुर के सेंट पाल स्कूल में 12वीं की छात्रा थी। उसकी पांच मार्च से परीक्षा भी शुरू होने वाली थी। पुलिस ने आयुषी का शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घर में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। लड़की के परिजनों ने बताया कि आयुषी देर रात तक पढ़ती थी इसलिए सरकारी क्वार्टर के बाहर वाले कमरे में वह रहती थी। अंदर के कमरे में पिता अमर सिंह, मां सुमन, छोटी बहन और भाई बुधवार रात सो रहे थे। रात में सुमन पानी पीने के लिए उठी तो उन्होंने बाहर वाले कमरे में झांक कर देखा तो उनके होश उड़ गए।

कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही के खिलाफ वारंट, 14 साल पुराना था मामला

कुशीनगर (एजेंसी)। प्रदेश के कैबिनेट मंत्री सूर्यप्रताप शाही के खिलाफ बुधवार को कुशीनगर के कसया दीवानी न्यायालय के अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट चंद्रमोहन चतुर्वेदी ने गैर जमानती वारंट जारी किया है। 14 साल पुराने इस मामले में मंत्री श्री शाही सहित 20 लोगों के विरुद्ध गैर जमानती वारंट जारी किया गया है। न्यायालय ने यह कार्रवाई बीते दिनों जारी जमानती वारंट पर कोर्ट में हाजिर न होने पर की है। 14 साल पहले वादी हैदर अली ने कसया थाने में तहरीर देकर बताया था कि महंथ रामशरण दास खेत में गेंहू का डंठल जला रहे थे। हैदर ने अपना फूस का घर होने का हवाला देकर आग बुझाने को कहा। इसी बात को लेकर विवाद हुआ। इस मामले में सूर्यप्रताप शाही समेत कामेश्वर गुप्ता, राजेश और ओमप्रकाश वर्मा सहित 25 अन्य लोगों पर 26 अप्रैल 2004 को धारा 147, 504, 506, 395, 298, 153 और 7 क्रिमिनल ला एमेंडमेंट एक्ट और सांप्रदायिक नारा लगाने की दफाओं के तहत मुकदमा दर्ज हुआ था। पुलिस ने 22 अगस्त 2012 को न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया। विचारण के दौरान आरोपित न्यायालय में हाजिर नहीं हुए तो बीते 6 फरवरी को जमानती वारंट जारी हुआ था। इसके पूर्व न्यायालय ने 17 जनवरी को कसया तहसील के अमीन की ओर से दर्ज कराए गए मुकदमें में गैर जमानती वारंट जारी किया था। न्यायालय ने मामले में अगली तारीख 9 मार्च तय करते हुए श्री शाही को हाजिर होने का आदेश दिया है।

हसनपुर के इस मोहल्ले में मुस्लिम भाई करते हैं होलिका की निगरानी

अमरोहा (एजेंसी)। अमरोहा नगर में मोहल्ला चामुंडा कायस्थान रोड पर होलिका दहन होता है। बीच चौराहे पर होलिका रखी जाती है। खास बात यह है कि होलिका की रखवाली मुस्लिम समुदाय के लोग करते हैं, क्योंकि यह स्थल मुस्लिम आबादी से घिरा हुआ है। हिंदू समुदाय के लोग लकड़ी आदि एकत्र कर होली से कई दिन पूर्व यहां रख देते हैं। इन लकड़ियों को कोई उठा कर न ले जाए या कोई आग न लगा दे इसकी निगरानी का जिम्मा मुस्लिम संभालते हैं। मोहल्ले के शरीफ अहमद बताते हैं कि गत वर्ष होलिका स्थल के चारों ओर रखे जाने वाले जलते दीयों से लकड़ी ने आग पकड़ ली थी। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने आनन-फानन में पुलिस को खबर की और आग को फौरन बुझा दिया। दूसरे समुदाय के लोगों ने इसकी जमकर प्रशंसा की। नगर पालिका के दो वार्डों को समेटने वाले इस मोहल्ले में कुल आबादी का 70 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम है। मोहल्ले के साबिर अली बताते हैं कि इस चौक पर दशकों से होली यूं ही रखी जा रही है। दोनों संप्रदाय के लोग एक दूसरे की भावनाओं का ख्याल रखते हैं। कभी किसी तरह का विवाद नहीं हुआ। कहते हैं कि संकीर्ण मानसिकता के लोग ओछी हरकत करते हैं। सभी त्यौहार भाईचारे का संदेश देते हैं।

आप विधायक की जान को खतरा नहीं, आरोप बेबुनियाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। मंडोली जेल अधिकारियों ने दिल्ली की एक अदालत को बुधवार को बताया कि आप विधायक अमानतुल्लाह खान की जान को कोई खतरा नहीं है।

अधिकारियों ने खान के आरोपों को ''बेबुनियाद' करार दिया। मुख्य सचिव अंशु प्रकाश पर हमला करने के आरोप में खान यहां 14 दिन की न्यायिक हिरासत में बंद हैं। पूर्वोत्तर दिल्ली की मंडोली जेल संख्या 11 के अधीक्षक ने अदालत के आदेश के अनुरूप मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट शेफाली बरनाला टंडन के समक्ष एक रिपोर्ट दायर की। विधायक ने एक आवेदन दायर कर अपनी जान को खतरा होने का आरोप लगाया था जिसके बाद अदालत ने उनसे इस पर जवाब मांगा था। अधीक्षक की रिपोर्ट में कहा गया कि आरोपी को बुलाकर उन्हें अदालत में उनकी पत्नी के आवेदन के बारे में जानकारी दी गई। इस आवेदन में आरोप लगाया गया था कि उनके पति ने मुलाकात के दौरान बताया था कि अन्य कैदियों द्वारा उन्हें पीटा गया या धमकी दी जा रही है। उन्होंने यह भीचिता जताई कि हिरासत के दौरान जेल में उनकी हत्या की जा सकती है। रिपोर्ट में कहा गया कि जब ओखला के विधायक से इस आवेदन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि उन्हें अपनी सुरक्षा को लेकर कोई चिंता नहीं है। इसमें कहा गया, ''इस मामले में टिप्पणी मांगने पर उन्होंने कहा कि उन्हें किसी कैदी द्वारा न तो पीटा गया और ना ही उन्हें कोई धमकी दी गई, ना ही उन्हें अपनी सुरक्षा को लेकर कोईचिंता है। वह फिलहाल काफी सुरक्षित महसूस कर रहे हैं।' रिपोर्ट के अनुसार इन टिप्पणियों को देखते हुए कहा जाता है कि आरोप बेबुनियाद हैं।

सीबीएसई की नीट संबंधी अधिसूचना पर हाईकोर्ट ने लगाई रोक

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने नीट के लिए सीबीएसई की अधिकतम आयुसीमा और योग्यता संबंधी अन्य नियमों से जुड़ी अधिसूचना पर बुधवार को रोक लगा दी। एमबीबीएस उम्मीदवारों ने सामान्य और आरक्षित श्रेणी में वमश: 25 साल और 30 साल की अधिकतम आयुसीमा तय करने का विरोध किया था।

इसका आवेदन जमा करने की आखिरी तारीख नौ मार्च है। इस संबंध में एमबीबीएस आवेदकों की विभिन्न याचिकाओं पर न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति चंदर शेखर की एक पीठ ने यह आदेश सुनाया। सीबीएसई की अधिसूचना के अनुसार ओपन स्कूल के छात्र, अतिरिक्त विषय के तौर पर जीवविज्ञान का चयन करने वाले छात्र, 11वीं एवं 12वीं की पढाई पूरी करने में दो वर्ष से अधिक का समय लेने वाले

एमबीबीएस उम्मीदवारों ने सामान्य और आरक्षित श्रेणी में वमश: 25 साल और 30 साल की अधिकतम आयुसीमा तय करने का विरोध किया था। अदालत ने अंतरिम आदेश जारी करते हुए यह भी स्पष्ट किया कि उम्मीदवार प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन दे सकते हैं

छात्र इस परीक्षा के निए आवेदन नहीं दे सकते। अदालत ने अंतरिम आदेश जारी करते हुए यह भी स्पष्ट किया कि उम्मीदवार प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन दे सकते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह परीक्षा में बैठ सकते हैं। पीठ ने कहा कि ओपन स्कूल और निजी तौर पर मान्यता प्राप्त बोर्ड से अपनी पढाई पूरी करने वाले छात्र परीक्षा के लिए आवेदन दे सकते हैं। अदालत ने कहा कि यह अंतरिम आदेश छह अप्रैल को अगली सुनवाई होने तक जारी रहेगा।

सड़क हादसे में 9वीं कक्षा के छात्र की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर-पश्चिम जिले के मुखर्जी नगर इलाके में बुधवार दोपहर एक बेकाबू कलस्टर बस ने बाइक सवार छात्र को कुचल दिया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। मृत छात्र का नाम मुखर्जी नगर निवासी यश कपूर उर्फ ऋतिक (16) है। पोस्टमार्ट के लिए पुलिस ने शव बाबू जगजीवन राम अस्पताल भेज दिया है। हादसे के बाद चालक मौके पर बस छोड़कर फरार हो गया। बस जब्त कर पुलिस चालक की तलाश में है। पुलिस के मुताबिक छात्र के परिवार में पिता संजीव कपूर, मां ऋचा कपूर और एक बड़ा भाई है। संजीव का ज्वेलरी का शोरूम है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक यश इलाके के एक पब्लिक स्कूल में नौवीं कक्षा का छात्र था। बुधवार दोपहर यश की मां ने उसे कोई सामान लेने के लिए बाजार भेजा था। बाइक पर बाजार जाते समेय मेन रोड पर एक कलस्टर बस ने उसे टक्कर मार दी। प्राप्त जानकारी के मुतातिबक हादसे के बाद भी चालक ने बस नहीं रोकी।

कार्यालय जाते समय मनी चेंजर से बैग छीनने की कर रहे थे कोशिश

सीपी में दिनदहाड़े मनी एक्सचेंजर को मारी गोली

नई दिल्ली (एजेंसी)। कनॉट प्लेस इलाके में बुधवार सुबह दिनदहाड़े दो बदमाशों ने एक मनी एक्सचेंजर को गोली मारकर घायल कर दिया और हवा में पिस्टल लहराते हुए फरार हो गए। घटनास्थल के नजदीक लगे एक सीसीटीवी कैमरे में उनकी तस्वीरें कैद हो गई हैं। वारदात के वक्त दोनों बदमाशों ने चेहरे पर रूमाल बांध रखा था। पुलिस वारदात में शामिल बदमाशों की पहचान में जुटी है। घायल अवस्था में भर्ती कराए गए तसवीर सिंह चौधरी

कनॉट प्लेस इलाके में घटनास्थल का निरीक्षण करती पुलिस जहां बदमाशों ने बुधवार को मनी एक्सचेंजर को गोली मारी थी।

का लेडी हर्डिंग अस्पताल में उपचार चल रहा है, उसकी हालत खतरे से बाहर बतायी गई है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक पीड़ित कनॉट प्लेस के इनर सर्किल ए ब्लॉक में पोस्ट अफिस के नजदीक पहली मंजिल पर ''पंखुरी ब्यूरो दी चेंज' नामक मनी एक्सचेंज कंपनी चलाता है और सपरिवार सेक्टर दो रोहिणी में रहते है। बुधवार सुबह दस बजे वह बैग लेकर मेट्रो से राजीव चौक स्टेशन पहुंचे और गेट नंबर सात और आठ के बीच स्थित अपने कार्यालय पहुंचने के लिए मेट्रो की चार नम्बर लिफ्ट से बाहर आए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक कार्यालय की तरफ बढ़ते समय दो बदमाशों ने उनसे बैग लूटने की कोशिश की। बैग न छोड़ने आर जबर्दस्त विरोध पर बदमाशों ने उन्हें गोली मार दी और बी ब्लॉक की तरफ फरार हो गए। कमर पर गोली लगने के बावजूद तसवीर अपने कार्यालय पहुंचे और बैग सुरक्षित रखकर अपने कर्मचारी की मदद से उपचार के लिए लेडी हार्डिंग अस्पताल पहुंचे।

एक टूर एंड ट्रैवेल्स कंपनी के कर्मचारी ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पाकर वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। पुलिस के मुताबिक बैग में कितनी रकम थी यह साफ नहीं है। आशंका है कि रेकी के बाद सुनियोजित ढंग से वारदात को अंजाम दिया गया। पुलिस ने आशंका जताई है कि मनी एक्सचेंजर के पास रकम होने की जानकारी पहले से बदमाशों को थी। ज्वाइंट कमिश्नर अजय चौधरी के मुताबिक बदमाशों की तलाश में पांच टीमें सीसीटीवी फुटेज व व घायल द्वारा बताए गए हुलिए के आधार पर बदमाशों की तलाश में जगह-जगह छापेमारी कर रही हैं। बातचीत करने पर पुलिस ने बताया कि घायल मनी चेंजर के बेटा आपराधिक पृष्ठभूमि का है, इसलिए पुलिस रंजिश के दृष्टिकोण से भी इस मामले की छानबीन कर रही है।

मरना तो है ही, अपने मनुष्यत्व और
अधिकार के लिए मरो -यशपाल

''एनपीए'

मंत्रालय का सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की 50 करोड़ रुपये से ज्यादा की रकम डकारने वाले खातों की सूची बनाकर सीबीआई को सौंपने के निर्देश का मतलब है कि सरकार ने बैंकों के डूबे हुए या डुबाए गए कर्ज की वसूली के लिए कमर कस लिया है। वास्तव में जिसे बैंकों की शब्दावली में ''एनपीए' कहते हैं, उसकी घोषित राशि 10 लाख करोड़ से ज्यादा हो चुकी है। यह आंकड़ा वह है जो हमारे सामने है। यदि सारे ऐसे खातों को खंगाला जाए तो न जाने यह आंकड़ा कितना ऊपर चला जाएगा? एनपीए का मतलब वैसे कर्ज से है, जिनकी वापसी की संभावना न के बराबर है। जिस तरह से कारोबारियों एवं बैंक अधिकारियों की मिलीभगत से बैंकों के धोखाधड़ी के मामले सामने आए हैं, उन्हें देखते हुए फंसे हुए कजरे के संदर्भ में व्यापक और कठोर कदम उठाया जाना अपरिहार्य हो गया है। आखिर हमारी आपकी गाढ़ी कमाई को कुछ लोग इस तरह डकार लें और उनसे वसूली की कोशिश न हो, वे छुट्टे घूमते रहें तो फिर कानून के राज का अर्थ क्या है? सभी बैंक के प्रबंध निदेशकों को 15 दिनों के अंदर ऐसे खातों की सूची सीबीआई को सौंपने की जिम्मेवारी दी गई है। अगर ऐसा नहीं किया तो फिर इसके लिए प्रबंध निदेशक ही जिम्मेवार होंगे। वास्तव में सीबीआई के पास जाते ही मामला आपराधिक छानबीन का हो जाता है। केवल सीबीआई को ही इसमें शामिल नहीं किया गया है, जहां मनीलांड्रिंग का मामला दिखे, वहां प्रवर्तन निदेशालय और दूसरे मामलों में दूसरे विभागों का भी सहयोग लिया जाएगा। इस तरह कह सकते हैं कि एनपीए की वसूली के लिए अब एक ठोस और कारगर अभियान आरंभ हो गया है। यह काम आसान नहीं है और 50 करोड़ से ज्यादा का कर्ज लेने वालों की संख्या भी काफी ज्यादा है। इनके खातों की सूची आदि बनाने में समय लगेगा। किंतु एक बार सूची तैयार हुई और उसके बाद कार्रवाई भी आरंभ हो गई तो फिर सही दिशा में गाड़ी चल पड़ेगी। उम्मीद करनी चाहिए कि इसके कुछ ठोस परिणाम भी आएंगे। हमारा मानना है कि जिन कर्जखोरों की हालत धन लौटाने की है और उनके न लौटाने के पीछे कोई वाजिब कारण नहीं है उनके साथ किसी सूरत में मुरव्वत नहीं बरती जानी चाहिए। सीबीआई और अन्य विभाग तालमेल से कार्य करके जो गबन के दोषी हैं, उनको कानून के कठघरे में भी खड़ा करती है तो इसका बेहतर संकेत जाएगा।

''वन बेल्ट वन रोड'

राष्ट्रपति शी जिनपिंग का कार्यकाल अनिश्चिकाल तक बढ़ाने संबंधी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रस्ताव से शायद ही किसी को अचरज हुआ होगा। क्योंकि पिछले साल जब दूसरे कार्यकाल के लिए इन्हें चुना गया था, तब इनके उत्तराधिकारी की घोषणा नहीं की गई थी। शी के पहले जो दो राष्ट्रपति हुएहैं, उनके उत्तराधिकारियों की पूर्व घोषणा की गई थी। अर्थात जब इस परंपरा का पालन नहीं किया गया उसी समय यह कयास लगाया जाने लगा था कि आने वाले दिनों में शी जिनपिंग पार्टी और सरकार दोनों में सबसे शक्तिशाली नेता के रूप में उभर सकते हैं। राष्ट्रपति पद पर लगातार दो कार्यकाल की समयसीमा के संवैधानिक प्रावधान को खत्म करने के बाद वे आजीवन इस पद पर बने रह सकते हैं। इस तरह चीन के साम्यवादी शासन के इतिहास में उनको माओ जेदांग के बाद दूसरे सबसे कद्दावर नेता के रूप में याद किया जाएगा। दरअसल, शी ने अपने शासन के पहले कार्यकाल के दौरान भ्रष्टाचार विरोधी अभियान चलाकर पार्टी और सरकार दोनों में अपना वर्चस्व स्थापित किया। सच पूछिए तो इस अभियान की आड़ में उन्हें पार्टी में सक्रिय अपने विरोधियों को खत्म करने का अच्छा अवसर मिला। हालांकि उनकी लोकप्रियता की एक बड़ी वजह पड़ोसी देशों के साथ निरूपित की गई वर्चस्ववादी विदेश नीति भी है। उन्होंने ''वन बेल्ट वन रोड' संपर्क परियोजना शुरू करके पूरी दुनिया को चीन की ताकत का अहसास भी कराया। चीन की संसद द्वारा राष्ट्रपति के कार्यकाल की समयसीमा को समाप्त करने की औपचारिकता पूरी करने के बाद शी को अगली पीढ़ी की आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया को गति देने में मदद मिलेगी। वर्तमान समय में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने शी को चुनौती देने वाला कोई नहीं है। लेकिन उनके अनिश्चितकाल तक बने रहने के प्रस्ताव का विरोध भी शुरू हो गया है। हालांकि चीन में जिस तरह का जन लोकतंत्र है और कम्युनिस्ट पार्टी का जो ढांचा है, उसे देखते हुए विरोध प्रतीकात्मक ही है। इसलिए हाल-फिलहाल कोई शी की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा को चुनौती देने की स्थिति में नहीं है। यह दीगर है कि किसी एक व्यक्ति में शक्ति का केंद्रीकरण कम्युनिस्ट पार्टी के सामूहिक नेतृत्व के सिद्धांत के विपरीत है, इसलिए देर-सबेर आंतरिक सत्ता संघर्ष की स्थिति से इनकार नहीं किया जा सकता।

सामंती और पूंजीवादी विचार

आर्थिक समस्याओं का एक चक्र होता है। उस पूरे चक्र को जब तक समाधान की नीति का हिस्सा नहीं बनाया जाता है तो समस्याएं बनी रहती है। भारत में मकान का मालिक होना सामंती और पूंजीवादी विचारों के प्रचार की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। साहित्य में भी मकान का मालिक होना बड़े सपने के पूरा होने के रूप में परोसा जाता है। किरायेदारों की त्रासदी से भी साहित्य भरा पड़ा है। कई फिल्में बनी है। इन सबके उल्लेख का तात्पर्य है कि एक मकान का हरेक परिवार के मालिक बनने का सपना भारतीय राजनीति के लिए सबसे अनुकूल रहा है। लेकिन सरकारी नीतियों का यह आलम है कि मकान तो बन रहे हैं लेकिन बेघरों की आबादी कम नहीं हो रही है।

सतीश पेडणोकर

छत्तीसगढ़ जैसे राज्य में एक बड़ी आबादी है जो कि मुफ्त में एलपीजी के सिलेंडर की सुविधा मिलने के बाजवूद उसका वर्ष भर उपयोग नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि एक बार के बाद दूसरी बार सिलेंडर में गैर भरवाने के लिए जो पैसे चाहिए उसका इंतजाम वे नहीं कर पाते हैं। यह हाल देश के कई राज्यों में है।

स्वंय केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री ने यह आंकड़ा पेश किया है कि ''प्रधानमंत्री उज्जवला योजना' के तहत गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों को 5 करोड़ एलपीजी कनेक्शन मुहैया कराने का लक्ष्य रखा है, उनमें अब तक वितरित गैस सिलेंडर में अच्छी-खासी तादाद उन परिवारों की है जो कि वर्ष भर गैस नहीं भरवा पाते हैं। इस उदाहरण को मकानों की समस्या के साथ प्रस्तुत करने की एक वजह यह समझना है कि किसी भी समस्या को आंकड़ों में तब्दील करने के खतरे होते हैं। आंकड़ों में तो उपलब्धि दर्ज हो जाती है लेकिन जो समस्याग्रस्त है वह समस्याओं से मुक्त नहीं हो पाता है बल्कि समाधान के रास्ते उसके लिए बोझ बन जाते हैं।

आर्थिक समस्याओं का एक चक्र होता है। उस पूरे चक्र को जब तक समाधान की नीति का हिस्सा नहीं बनाया जाता है तो समस्याएं बनी रहती है। भारत में मकान का मालिक होना सामंती और पूंजीवादी विचारों के प्रचार की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। साहित्य में भी मकान का मालिक होना बड़े सपने के पूरा होने के रूप में परोसा जाता है। किरायेदारों की त्रासदी से भी साहित्य भरा पड़ा है। कई फिल्में बनी है। इन सबके उल्लेख का तात्पर्य है कि एक मकान का हरेक परिवार के मालिक बनने का सपना भारतीय राजनीति के लिए सबसे अनुकूल रहा है। लेकिन सरकारी नीतियों का यह आलम है कि मकान तो बन रहे हैं लेकिन बेघरों की आबादी कम नहीं हो रही है। यह समस्या तब से और जटिल होने की प्रक्रिया में दिख रही है, जब से इंसान और विकास को महज आंकड़े में तब्दील करने की विचारधारा प्रबल हुई है। यहां केवल इस समस्या पर अपनी ओर से कुछ कहने के बजाय इससे संबंधित कुछ आंकड़े रख दिए जाएं तो तस्वीर साफ हो सकती है। भारत सरकार का नया आर्थिक सर्वेक्षण बताता है कि भारत के शहरों में एक तरफतो आवास की कमी है तो दूसरी तरफ खाली मकानों की संख्या भी बढ़ रही है। 2001 में 65 लाख मकान खाली पड़े थे। इसके बाद विकास के आंकड़ों में ये आया कि बड़ी तादाद में नये मकान बने हैं, लेकिन उस आंकड़े का वास्तविक सच है कि खाली मकानों की तादाद दस वर्षो में बढ़कर 1 करोड़ 11 लाख हो गई। 2016 की जनगणना बताती है कि कुल शहरी आवास का 12 प्रतिशत हिस्सा खाली पड़ा है। इस आंकड़े की गहराई में जितना जा सकते हैं, वह देश में आर्थिक विकास के सच के उतने ही करीब हमें ले जाता है। यानी छोटे शहर, बड़े शहर, मध्य आकार के शहर और देश के विकसित शहरों के रूप में विकास का मॉडल वास्तव में भारतीय समाज में गैरबराबरी की आर्थिक नीतियों से रूब-रू कराती है। महाराष्ट्र में यदि बीस लाख मकान खाली पड़े हैं तो केवल मुंबई में 4 लाख 80 हजार मकान खाली हैं। दूसरा नंबर दिल्ली का है जहां 3 लाख मकाव खाली पड़े हैं। बेंगलुरू में भी इतनी ही संख्या खाली मकानों की है। यानी विकास के जितने बड़े मॉडल की तरफ हम बढ़ते हैं, खाली मकान की संख्या उतनी ही बढ़ती दिखाई देती है। गुड़गांव को विकास के एक मॉडल के रूप में पेश किया जाता है, लेकिन वहां का सच है कि देश में सबसे ज्यादा मकान यानी 26 प्रतिशत मकान खाली पड़े हैं। जाहिर सी बात है कि मकानों का निर्माण जरूरतमंदों के लिए नहीं है। यह तो विकास का एक पक्ष है कि मकान बन रहे हैं मगर जरूरतमंदों को वे हासिल नहीं हो सकते हैं। लेकिन इससे जुड़े दूसरे पहलूओं पर भी गौर करें तो सबके लिए घर उपलब्ध कराने के नारे की हकीकत के करीब और पहुंचा जा सकता है। मसलन एक बड़ी आबादी है, जिसने बैंकों से महंगे ब्याज पर कर्ज लेकर मकानों के लिए रीयल स्टेट के धंधे में लगी कंपनियों को पैसे का भुगतान किया लेकिन उन्हें मकान उपलब्ध नहीं हो सका। यदि मकान मिला तो निजी कंपनियों की नौकरी से बाहर कर दिए गए और मकान की किश्त पूरी नहीं दी जा सकी। कई लोगों के बारे में जानकारी है कि उन्होंने अपने सपने को पूरा करने के लिए दिन रात एक कर दिया लेकिन अचानक से कंपनी के मालिक ने उन्हें नौकरी से बाहर कर दिया। मकान का मालिक होना एक आर्थिक चक्र का हिस्सा है। महज मकान बनना या मकान उपलब्ध हो जाना ही मकान की सुविधा का पर्याय नहीं है। मकान का स्वामित्व हासिल होना और उसे बरकरार रख पाना एक आर्थिक चक्र का हिस्सा होता है। विकास की जो दिशा है, उसमें इस विचार की गहन पड़ताल करने की जरूरत है कि क्या वास्तव में सबको घर मुहैया कराने का नारा नीतियों के साथ जुड़ा दिखता है? शहरीकृत विकास में घर की सुविधा का एक दूसरा रास्ता किरायेदारी का है। देश के ग्रामीण इलाकों में किराये के मकानों में रहने वाले परिवारों का हिस्सा महज 5 प्रतिशत है। शहरीकृत विकास में गुजरात को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक मॉल के रूप में पेश किया है। वहां मकानों के मालिक के बजाय किरायेदारों की संख्या देश में जहां सबसे ज्यादा है। गुजरात के अलावा महाराष्ट्र और विकास का नया मॉल बनने को आतुर आंध्र प्रदेश के शहरी इलाकों में किरायेदारी सबसे ज्यादा है। देश में शहरी क्षेत्रों में कुल 31 प्रतिशत हिस्सा किरायेदारी का है। आर्थिक सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हैं कि बड़े शहरों में किराये के मकानों का हिस्सा सबसे ज्यादा होता है। यह कुल मकानों का चालीस प्रतीशत हिस्सा होता है। इससे शहरों के विकास की जो नीतियां चल रही है और उसके बीच में जो ''सबके के लिए घर' मुहैया कराने का जो नारा सुनने को मिलता रहा है, उसके बीच भारी अंतर को समझा जा सकता है। किसी भी समस्या के एक हिस्से को यदि एक राजनीतिक नारा बनाया जा रहा है तो समस्या से ग्रस्त लोगों को चाहिए कि वह उस नारे की हकीकत को पूरी आर्थिक नीति से जोड़कर देखें। टुकड़ों में जिस तरह से समस्याओं को देखने का नजरिया विकसित किया गया है, उससे राजनीति को टुकड़ों में ही खेलने का अवसर मिलता है। रोटी कपड़ा और मकान का नारा भारतीय राजनीति में नई आर्थिक नीतियों के साथ और जटिल हो गया है।

चलते चलते

होली है भई होली है

आज कोई आप पर घोटाले का ही आरोप लगा दे, तो उसे हंस कर टाल दीजिएगा। क्योंकि यह चोर कहने से तो अच्छा है। हालांकि अब घोटाले भी घोटाले कहां रहे?वे अब फ्रॉड बन गए हैं। मतलब चार सौ बीसी है बस और क्या? वैसे भी जब योजना आयोग का नाम बदल दिया गया, जब शहरों के नाम बदले जा रहे हैं, जब सड़कों के नाम बदले जा रहे हैं,

होली है साहब, इसलिए आज अगर आपको कोई भला-बुरा भी कह दे तो बुरा मत मानिएगा! मान लो, आज कोई आप पर घोटाले का ही आरोप लगा दे, तो उसे हंस कर टाल दीजिएगा। क्योंकि यह चोर कहने से तो अच्छा है। हालांकि अब घोटाले भी घोटाले कहां रहे?वे अब फ्रॉड बन गए हैं। मतलब चार सौ बीसी है बस और क्या? वैसे भी जब योजना आयोग का नाम बदल दिया गया, जब शहरों के नाम बदले जा रहे हैं, जब सड़कों के नाम बदले जा रहे हैं, जब सरकार नेम चेंजर का आरोप सहकर भी योजनाएं तक नाम बदलकर लागू कर रही हैं तो घोटाला भी घोटाला क्यों रहे? उसे अब फ्रॉड बन ही जाना चाहिए। फिर भी अगर कोई आज के दिन आप पर घोटालों का आरोप लगा ही दे तो हंस कर टाल दीजिएगा। आखिर तो होली में ठिठोली भी एक रिवाज, एक रस्म अदायगी ही है। लोग तो इस दिन चुनरियां रंगने के चक्कर में रहते हैं। आप पर तो बस आरोप ही लग रहा है। सो मानहानि करने की धमकी मत दीजिएगा। आज के दिन तो लोग कालिख और कीचड़ लगाने का भी बुरा नहीं मानते। मान लिया कि आप संभ्रांत हैं। कालिख और कीचड़ से आपको घिन आएगी। वैसे भी आप कोई नेता थोड़े ही हैं कि कालिख-कीचड़ भी सह लेंगे। उनसे कुछ सीख लीजिए। जब लूट में उनकी सीख और सहयोग लिया है तो यह सीख भी गांठ बांध लीजिए। जब गरीब हिंदुस्तानियों का पैसा खाया जा सकता है तो उनकी कालिख और कीचड़ को भी सहन कर जाइएगा। इसकी कीमत करोड़ों-अरबों में है। हालांकि वो आप तक पहुचेंगे कैसे? आप तो कहीं विदेश में बैठे हैं। आपके भाग्य में लुत्फ उठाना ही लिखा है। गरीब हिंदुस्तानियों के नसीब में तो बस किसलना ही लिखा है। होली के दिन अगर वे नेताओं पर कालिख और कीचड़ लगाकर और आप जैसों पर घोटाले के आरोप लगाकर अपनी भड़ास निकाल लेते हैं तो कोई बात नहीं। बुरा मत मानिएगा। और हां, यह सब कहने की कोई जरूरत नहीं साहब कि मैं आपका पैसा लौटा दूंगा। हम अच्छी तरह जानते हैं कि पैसा कोई नहीं लौटाता। पैसा तो पैसा हम तो यह भी जानते हैं कि आप भी लौटकर नहीं आने वाले।

सत्संग

शिक्षित, सम्पन्न और सम्मानित

शिक्षित, सम्पन्न और सम्मानित होने के बावजूद भी कई बार व्यक्ति के संबंध में इसलिए गलत धारणाएं बन जाती हैं कि उसमें शिष्टाचार की कमी होती है। व्यक्ति चाहे कितना ही सम्पन्न और शिक्षित क्यों न हो, पर उनके व्यवहार में यदि शिष्टता, शालीनता नहीं है तो लोगों पर उनका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। उनकी विभूतियों की चर्चा सुनकर कुछ देर के लिए लोग भले ही प्रभावित हो जाएं, परन्तु उनके सम्पर्क में आने पर उनके अशिष्ट आचरण की छाप उस प्रभाव को धूमिल कर देती है। उन लोगों को उनसे दूर कर देती है। इसलिए शिष्टाचार सदा आवश्यक होता है। शिष्टता में कुशलता के लिए समय की पहचान भी उतना ही जरूरी है। शिक्षा, सम्पन्नता और प्रतिष्ठा की दृष्टि से ऊंचा होते हुए भी व्यक्ति को यदि हर्ष के अवसर पर हर्ष और शोक के अवसर पर शोक की बातें करना न आए तो लोग उसका मुंह देखा सम्मान भले ही कर लें, परन्तु मन में उसके प्रति कोई अच्छी धारणाएं नहीं रख सकेंगे। शिष्टाचार और लोक व्यवहार का यही अर्थ कि हमें समयानुकूल आचरण और बड़े-छोटे से उचित बर्ताव करना आए। यह गुण किसी विद्यालय में प्रवेश लेकर अर्जित नहीं किया जा सकता। इसके लिए सम्पर्क और पारस्परिक व्यवहार का अध्ययन तथा क्रियात्मक अभ्यास आवश्यक होता है। अधिकांश व्यक्ति यह नहीं जानते कि किस अवसर पर किससे कैसा व्यवहार करना चाहिए। कहां किस प्रकार उठना-बैठना चाहिए और किस प्रकार चलना-रुकना चाहिए। यदि खुशी के अवसर पर शोक और शोक के समय हर्ष की बातें की जाएं, बच्चों के सामने दर्शन और वैराग्य तथा वृद्धों के सामने बालोचित या युवाओं जैसी शरारतें की जाएं, गर्मी में चुस्त, गर्म, भड़कीले वस्त्र और शीत ऋतु में हल्के कपड़े पहने जाएं, तो देखने-सुनने वालों के मन में विपरीत भावनाएं आएंगी। कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, हम घर में हो या बाहर कार्यालय में हों या दुकान पर, मित्रों-परिचितों के बीच हों अथवा अजनबियों के बीच, व्यवहार करते समय शिष्टाचार बरतना आवश्यक है। यह न हो तो व्यक्ति समाज से कट जाएगा। जीवन साधना के साधक को यह शोभा नहीं देता। उसे जीवन में पूर्णता लानी ही चाहिए और उसके लिए शष्टाचार को जीवन में समुचित स्थान देना चाहिए।

फोटोग्राफी...

वर्ष 2017 में यूरोप के सबसे पसंदीदा ट्रैवल डेस्टी नेशन के अवॉर्ड के लिए पुर्तगाल को चुना गया है। रूस के सेंट पीटरर्स बर्ग में एक कार्यक्रम के दौरान इसकी घोषणा की गई। उसके अनुसार पुर्तगाल का मदैइरा आइलैंड' और 'द एल्ग्रेव बीच' को सबसे ज्यादा वोट मिले, इसलिए पुर्तगाल को इस अवॉर्ड के लिए चुना गया। वोटिंग करने वालों में ट्रैवल प्रोफेशनल, इस उद्योग से जुड़े लीडर्स और कई देशों की यात्रा करने वाले लोग थे। इसमें ट्रैवल प्रोफेशनल का एक वोट दो के बराबर था। इसी तरह इस्तांबुल (तुर्की) के सा इरागन पैलेस होटल को यूरोप के प्रमुख एवं पेरिस के द पेनिनसुला होटल को प्रमुख ल्गज़री होटल का अवॉर्ड दिया गया। यह फोटो मदैइरा आइलैंड के नेचरल स्वीमिंगपूल का है, जहां समुद्र का क्रिस्टल क्लीयर पानी लोगों को आकर्षित करता है। पोर्तो मोनिज़ गांव में स्थित यह पूल के बारे में मान्यता है कि सदियों पहले ज्वालामुखी की चट्टानों से यह बना है। वहां अपने आप समुद्र का पानी आता है।visitmadeira.pt

''पार्लियामेंट और पार्लियामेंटिरयन

सोशल मीडिया से जुड़ा एसोचेम का एक सव्रेक्षण देश की सरकार व अविभावकों को सावधान करने वाला है। उसमें कहा गया है कि भारत के 13 साल के 73 फीसद बच्चे फेसबुक के साथ में अन्य सोशल साइट्स पर काफी सक्रिय हैं। गौरतलब है कि एसोचेम के सोशल डेवलपमेंट फाऊंडेशन ने दिल्ली, मुबई, बेंगलुरू,चेन्नई, कोलकाता, अहमदाबाद, हैदराबाद, पुणो, लखनऊ और देहरादून जैसे दर्जनभर महानगरों के चार हजार से अधिक अविभावकों से साक्षात्कार करते हुए निष्कर्ष निकाले हैं। इस सव्रे से खुलासा हुआ है कि भारत में 8 से 13 आयु वर्ग के 73 फीसद बच्चे फेसबुक का इस्तेमाल करते हैं। हैरत की बात यह है कि इस आयु वर्ग के 75 फीसद बच्चों के मां-बाप में खुद ही उन्हें इसकी पूरी जानकारी दी है। इससे भी अधिक ताज्जुब की बात तो यह है कि 82 फीसद मां-बाप ने अपने बच्चों को खुद अकाउंट बनाने में खासी मदद की है। इस सव्रे के निष्कर्ष से यह बात भी सामने आई है कि 13 साल के 25 फीसद,11 साल के 22 फीसद,10 साल के 10 फीसद और 8-9 साल के तकरीबन 5 से 10 फीसद बच्चे फेसबुक के साथ में सोशल मीडिया की अलग-अलग साइट्स पर सक्रिय हैं। इस सव्रे का यह तय भी उल्लेखनीय है कि 10 से 16 साल तक के 85 फीसद बच्चों की दिनचस्पी फेसबुक के साथ में फ्लिक कॉम, गूगल प्लस, व स्नैपचैट जैसी सोशल साइट्स से अधिक रही हैं। भारत में भी सोशल मीडिया की आभासी दुनिया ने सामाजिक संबंधों को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। सच्चाई यह है कि सोशल मीडिया साइट्स प्रयोग करने के मामले में भारत आज एशिया में तीसरा और विश्व में चौथा देश है। साथ ही इंटरनेट प्रयोग करने वाली 85 फीसद आबादी यहां 8 से 40 आयुवर्ग के बीच है। यह वह वर्ग है जो नेट सर्च, ई-मेल, फेसबुक, ट्विटर व लिंक्डइन के जरिये समाज के वास्तविक संबंधों से धीरे-धीरे कट रहा है। इस संदर्भ में सामाजिक तय बतातें हैं कि आज कम्प्यूटर व इंटरनेट की आभासी दुनिया बच्चों में परिवार, स्कूल व क्रीड़ा समूह जैसी प्राथमिक संस्थाओं की उपादेयता पर सवालिया निशान लगा रही है। कहने की जरूरत नहीं कि कम्प्यूटर व इंटरनेट सूचनाओं की नई नेटवर्क सोसाइटी में पारस्परिक संवाद के लिए दैहिक उपस्थिति आवश्यक नहीं है। सूचनाओं के इस देहविहीन समाज में आज इन यक्ष प्रश्नों का उठना स्वाभाविक ही है कि इस आभासी दुनिया में हमारे प्रत्यक्ष संवाद बनाने वाले ''रोल मॉडल' दम क्यों तोड़ रहे हैं? फेसबुक, व्हाटसएप व ट्विटर के सामने मष्तिष्क को तरोताजा रखने वाला हमारा स्वस्य सीधा सामाजिक संवाद जीवन से नदारद क्यों हो रहा है? क्यों इस प्रकार की अस्वस्य संदेश देने वाली सोशल साइटस् बच्चों व युवाओं के वास्तविक संसार को नष्ट कर रहीं हैं? संस्कृति और सांस्कृतिक मूल्यों की सीख देने वाले परिवार और स्कूल तक बच्चों के बचपन से दूर हो रहे हैं। सामाजीकरण का समाजशास्त्र बताता है कि बचपन का सही निवेश जीवन भर मानवीय संवदेनाओं को संभाल कर रखता है। वर्तमान का सच यह है कि दैहिक सामाजीकरण का अभाव और सोशल मीडिया, कम्प्यूटर व इंटरनेट के यांत्रिक संवादों की प्रचुरता बचपन को द्वंदात्मक बना रही है। अध्ययन यह भी बताते हैं कि सोशल मीडिया के प्रयोग से अनभिज्ञ होने के कारण ही ज्यादातर बच्चे साइबर बुलिंग और आनॅलाइन लैंगिक शोषण का शिकार हो रहे हैं। हम इस सच से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि नियंतण्र समाज के बढ़ते बाजार और डिजिटल संसार से आने वाली धाराओं से आज बचाव मुश्किल है। परन्तु बचपन को सुरक्षित करने के लिए खास यह है कि पहले उन्हें समाज की दुनियावी जिंदगी की गरमाहट से परिचित कराया जाए।

प्रेम रंग सच्चा है सच्चा

होली आपसी प्रेम का त्योहार है। इसमें आप आपने मन का कचरा अग्नि की भेट करते हैं और मोहब्बत के रंग से मन को रंगते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए, तो ऐसा करना अचेतन की शुद्धि के लिए अनिवार्य है...

रंगों का सीधा संबंध मनुष्य के भावजगत से है। हर रंग भीतर के किसी भाव को दिखाता है। रंगों से उल्लास का भी पता चलता है। होली का त्योहार रंग और उल्लास के साथ प्रेम और भाइचारे का भी त्योहार है। रंगने से पहले आदमी का रूप अलग होता है, रंग के बाद कुछ और हो जाता है। रंगे हुए को पहचान पाना मुश्किल है। यानी बदलाव आ जाता है। यानी होली बदलाव का भी त्योहार है। होली के साथ जो पुरानी कहानी जुड़ी है, उसमें भी हमें कई प्रतीक मिल जाते हैं।

हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद सच में कभी थे या नहीं, यह तो कोई नहीं बता सकता, योंकि पुराण इतिहास नहीं है, वह मनुष्य के जीवन में रचा-बसा सत्य है। उसे इतिहास की तरह प्रामाणिक नहीं माना जा सकता, लेकिन मनुष्य के जीवन को सुंदर बनाने के कई तव उसमें मिल सकते हैं। इस कहानी में दो विपरीत विचारधाराओं का संघर्ष हमें साफ़ दिखाई देता है। वह है आस्तिक और नास्तिक का संघर्ष, जो कि हमारे जीवन में रोज़ होता है, हर मिनट होता है। आस्तिकता और नास्तिकता का संघर्ष, पिता और पुत्र का, कल और आज का, शुा और अशुा का संघर्ष है।

होली की कहानी में हिरण्यकश्यप पिता हैं। पिता बीज है, पुत्र उसी का अंकुर है। हिरण्यकश्यप जैसी दुष्टात्मा को पता नहीं कि मेरे घर आस्तिक पैदा होगा, मेरे प्राणों से आस्तिकता जन्मेगी। इसका विरोधाास देखें। इधर नास्तिकता के घर आस्तिकता प्रकट हुई और हिरण्यकश्यप घबरा गया। जीवन की मान्यताएं, जीवन की धारणाएं दांव पर लग गईं।

ओशो ने इस कहानी में छुपे प्रतीक को सुंदरता से खोला है, 'हर बाप बेटे से लड़ता है। हर बेटा बाप के ख़िलाफ़ बग़ावत करता है। यह सिर्फ़ बाप-बेटे की कहानी ही नहीं, हर 'आज' बीते 'कल' के ख़िलाफ़ बग़ावत करता है। वर्तमान, अतीत से छुटकारे की चेष्टा करता है। अतीत पिता है, वर्तमान पुत्र है। हिरण्यकश्यप मनुष्य के बाहर नहीं है, न ही प्रह्लाद बाहर है। हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद दो नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक व्यति के भीतर घटने वाली दो घटनाएं हैं।

मां अमृत साधना का कहना है, जब तक मन में संदेह है, हिरण्यकश्यप मौजूद है। तब तक अपने ाीतर उठते श्रद्धा के अंकुरों को तुम पहाड़ों से गिराओगे, पत्थरों से दबाओगे, पानी में डुबाओगे, आग में जलाओगे, लेकिन तुम जला न पाओगे। जहां संदेह के राजपथ हैं, वहां भीड़ साथ है। जहां श्रद्धा की पगडंडियां हैं, वहां तुम एकदम अकेले हो जाते हो। संदेह की क्षमता सिर्फ़ विध्वंस की है, सृजन की नहीं है। संदेह मिटा सकता है, बना नहीं सकता। संदेह के पास सृजनात्मक ऊर्जा नहीं है।

आस्तिकता और श्रद्धा कितनी ही छोटी यों न हो, शतिशाली होती है। प्रह्लाद के भक्ति गीत हिरण्यकश्यप को बहुत बेचैन करने लगे होंगे। उसे एकबारगी वही सूझा, जो सूझता है, नकार, मिटा देने की इच्छा। नास्तिकता विध्वंसात्मक है। उसके साथ ही आग पैदा होती है। इसलिए हिरण्यकश्यप की बहन है अग्नि, होलिका। लेकिन अग्नि सिर्फ़ अशुा को जला सकती है, शुद्ध तो उसमें से कुंदन की तरह निखरकर बाहर आ जाता है। इसीलिए आग की गोद में बैठा प्रह्लाद अनजला बच गया।

उसी दिन को हमने अपनी जीवन शैली में उत्सव की तरह शामिल कर लिया। फिर जन-सामान्य ने उसमें रंगों की बौछार जोड़ दी। बड़ा सतरंगी उत्सव है। पहले अग्नि में मन का कचरा जलाओ। उसकेबाद प्रेम रंग की बरसात करो। यह होली का मूल स्वरूप था। इसके पीछे मनोविज्ञान है, अचेतन मन की सफ़ाई करना। इस सफ़ाई को पश्चिमी मनोविज्ञान में कैथार्सिस या रेचन कहते हैं। साइकोथेरेपी का अनिवार्य हिस्सा होता है मन में छुपी गंदगी की सफ़ाई करना। उसके बाद ही आप अपने भीतर अच्छा महसूस कर सकते हैं, जैसे साफ़-सुथरे घर में रहकर करते हैं।

ओशो ने अपनी ध्यान विधियां इसी की बुनियाद पर बनाई हैं। होली जैसे वैज्ञानिक पर्व का हम थोड़ी बुद्धिमानी से उपयोग कर सकें, तो इस एक दिन में बरसों की सफ़ाई हो सकती है। भीतर के कचरे को आग में फैंक दीजिए और पवित्रता-प्रेम के रंग से ख़ुद को, सबको रंग दीजिए। होली यही सिखाती है कि प्रेम के रंग से सच्चा कोई और रंग नहीं होता।

नाच गाने का उत्सव

होली बंधन, वर्जनाओं और नियमो को तोड़ने का पर्व है। मस्ती और उमंग का। नाच-गाना हमारी सांस्कृतिक विरासत है। उससे हम अपनी प्रसन्नत व्यत करते हैं। होली पर सबसे पुराना गीत 13वीं सदी का मिलता है, जिसेअमीर ख़ुसरो ने बनाया था। होली के ज़्यादातर गीतों में कृष्ण और राधिका का प्रेम दिखाया जाता है। ज़्यादातर चौताल में गाया जाता है। होली गीतों को फगवा या फाग कहा जाता है, लेकिन अब तो मस्ती से भरा हर गाना होली पर गाया जाता है।

फाल्गुन भगाए आलस

होली वैज्ञानिक तरीक़े से भी एक सही समय पर आने वाला त्योहार है। फाल्गुन या मार्च का महीना ऐसा होता है, जब सर्दी पूरी तरह विदा तो ले लेती है, लेकिन गर्मी पूरी तरह नहीं आती। इसलिए हमारा शरीर बहुत आलस में रहता है। हम ज़्यादा सोते हैं। उस आलस को तोड़ती है होली।

बुरा न मानो होली है

रंग हमारे जीवन से गहरे से जुड़े हुए हैं। आपका पसंदीदा रेग न केवल आपके स्वभाव को दर्शाता है, बल्कि आपका कई आदतों के बारे में भई बताता है....

किस रंग से तिलक करेंगे?

हम जो भी रंग पसंद करते हैं, उसी रंग को अपने आस-पास देखना और महसूस करना चाहते हैं। हर पसंदीदा रंग हमारे व्यतित्व व्यवहार, गुण, अवगुण व स्वभाव को दर्शाता है। आइए डालें, रंगों को पसंद करने वालों के स्वभाव पर एक नज़र :-

लाल- यह रंग सभी रंगों में ज़्यादा भड़कीला, आकर्षक व उतेजक होता है। लाल रंग पसंद करने वाले लोग शक्ति व ऊर्जा से परिपूर्ण होते हैं। इनमें गज़ब का आत्मविश्वास होता है। ये लोग सदा आकर्षण का केंद्र बने रहना चाहते हैं। अगर ये अपनी ऊर्जा का धैर्य से रचनात्मक प्रयोग करना सीख जाएं, तो जीवन में बहुत कुछ बिना समय गंवाए सीख सकते हैं।

पीला- यह रंग प्रगति, उन्नति व विकास का प्रतीक है। इसे पसंद करने वाले लोगों में उदारता, दया, करूणा, सौभ्यता, न्याय तथा दूसरों को सुरक्षा व संरक्षण देने की प्रवृाि पाई जाती है। इन्हें समझना आसान नहीं होता। इनका व्यक्तित्व रोचक व प्रेरक होता है। चुनौतियों का सामना करना इन्हें अच्छा लगता है। समय रहते इच्छा अनुसार मित्र नहीं मिलते, इसका इन्हें विशेष दुख होता है। सदा ऊपर उठने वाले ये जातक अक्सर छोटी-छोटी बातों पर ही ख़ुश हो जाते हैं।

नीला- यह रंग मनुष्य के अंदरूनी विकास को दर्शाता है। इस रंग को पसंद करने वाले लोग मेहनती व निरंतर गतिशील रहते हैं। इनका मन रहस्य, जादू-टोना, खोज आदि में लगता है। यह रंग जातक को तन्हाई व एकांत की ओर उकसाता है, जिसकी वजह से वे अंतर्मुखी व चुनौतियों से विमुख होने लगता है। लेकिन ऐसा अस्थाई रूप में होता है। इनके विचारों में गज़ब की शक्ति होती है। ये जातक जितने संवेदनशील होते हैं, उतने सहनशील भी होते हैं।

हरा- यह प्रकृति का रंग है, जो ताज़गी, स्वच्छता, और जीवन का प्रतीक है। इसे पसंद करने वाले जीवन के प्रति सचेत रहते हैं। अपनी वाणी के प्रभाव से दूसरों को शीघ्र अपना बना लेते हैं, परंतु स्वयं दूसरों पर जल्द यक़ीन नहीं करते। किसी के अधीन कार्य करना इन्हें पसंद नहीं होता। स्वतंत्रता प्रिय ऐसे लोग घुमकड़ प्रवाि के होते हैं। परिस्थितियों व समस्याओं पर काबू पाना इन्हें ख़ूब आता है। इन्हें ज्ञान, जानकारी व सूचना एकत्रित करने का शौक़ होता है।

काला- जिस तरह काला रंग हर रंग पर अलग से नज़र आता है, उसी प्रकार इस रंग को पसंद करने वाले जातकों का व्यक्तित्व व व्यवहार प्रभावपूर्ण होता है। ऐसे लोग जहां भी जाते हैं, अपनी अलग पहचान बना लेते हैं। ये लोग हमेशा लीक से हटकर कुछ करने की कोशिश में रहते हैं।

सफेद- यह रंग सबसे हल्का व आंखों को सुकून देने वाला है। यह शांति, उमंग, उत्सव, जोश, ताज़गी और कोमलता का प्रतीक है। इसे पसंद करने वाले लोग शांत स्वभाव वाले, सकारात्मक, संतुलित व आशावादी होते हैं। साधारण जीवन शैली इन्हें पसंद होती है। ये खुले विचारों वाले एवं स्पष्टवक्ता होते हैं।

गुलाबी- यह रंग कोमलता, कामुकता, प्रेम, ऐश्वर्य और सौंदर्य का प्रतीक है। इसे पसंद करने वालों में प्रेम और दया की भावना अधिक होती है। ऐसे जातक आलीशान जीवन जीना पसंद करते हैं। कार्य करने की इनकी अदा निराली होती है तथा व्यवहार में एक नज़ाकत होती है। ज़्यादातर कल्पना में रहना पसंद करते हैं। परंतु यदि इस आदत में सुधार कर लें, तो सपनों को हक़ीक़त में बदल सकते हैं। प्रेम इनकी कमज़ोरी है।

संतरी व गेरुआ- दोनों ही रंग त्याग, तपस्या, साधना व प्रज्ञा के प्रतीक हैं। इन्हें पसंद करने वालों में संतों के लक्षण पाए जाते हैं। यह चीज़ों को देखकर आकर्षित ज़रूर होते हैं, लेकिन उनके मोह में नहीं बंधते। इन रंगों को पसंद करने वालों की विशेषता यह है कि वे साहसी, निडर, आत्मविश्वासी ओर दृढ़ संकल्पी होते हैं। ज़्यादातर लोगों को अधेड़ उम्र में यह रंग पसंद आने लगता है। ऐसे जातकों की वाणी, व्यवहार एवं व्यक्तित्व में ओज और चेतना साफ़-साफ़ दिखाई देती है।

आसमानी- वैसे तो इसे पसंद करने वालों का स्वभाव गुलाबी रंग को पसंद करने वालों से मेल खाता है, परंतु यह ज़्यादा व्यवहारिक व होशपूर्ण होते हैं। ये बिना किसी औपचारिकता के किसी भी माहौल एवं वातावरण में सरलता से घुल मिल जाते हैं। ये लोग जितनी ऊर्जा व उत्साह से कार्य शुरू करते हैं, उसी ऊर्जा व लगन से उसे अंजाम तक नहीं पहुंचा पाते। दूसरों से ये सय स्वभाव व इज़्ज़त की उम्मीद रखते हैं।

होली पर जानिए, क्या है पूजन का सही तरीका

होलिका दहन होने के बाद होलिका में जिन वस्तुओं की आहुति दी जाती है, उनमें कच्चे आम, नारियल, भुट्टे या सप्तधान्य, चीनी के बने खिलौने, नई फसल का कुछ भाग है। सप्तधान्य हैं गेहूं, उड़द, मूंग, चना, जौ, चावल और मसूर। होलिका दहन की प्रामाणिक पूजन विधि होलिका दहन करने से पहले होली की पूजा की जाती है। इस पूजा को करते समय पूजा करने वाले व्यक्ति को होलिका के पास जाकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठना चाहिए। पूजा करने के लिए क्या सामग्री प्रयोग करना चाहिए-

एक लोटा जल, माला, रोली, चावल, गंध, पुष्प, कच्चा सूत, गुड़, साबुत हल्दी, मूंग, बताशे, गुलाल, नारियल आदि का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नई फसल के धान्यों जैसे पके चने की बालियां व गेहूं की बालियां भी सामग्री के रूप में रखी जाती हैं।

इसके बाद होलिका के पास गोबर से बनी ढाल तथा अन्य खिलौने रख दिए जाते हैं। होलिका दहन मुहूर्त समय में जल, मौली, फूल, गुलाल तथा ढाल व खिलौनों की चार मालाएं अलग से घर से लाकर सुरक्षित रख ली जाती हैं। इनमें से एक माला पितरों के नाम की, दूसरी हनुमानजी के नाम की, तीसरी शीतलामाता के नाम की तथा चौथी अपने घर-परिवार के नाम की होती है।

कच्चे सूत को होलिका के चारों ओर तीन या सात परिक्रमा करते हुए लपेटना होता है। फिर लोटे का शुद्ध जल व अन्य पूजन की सभी वस्तुओं को एक-एक करके होलिका को समर्पित किया जाता है। रोली, अक्षत व पुष्प को भी पूजन में प्रयोग किया जाता है। गंध-पुष्प का प्रयोग करते हुए पंचोपचार विधि से होलिका का पूजन किया जाता है। पूजन के बाद जल से अर्घ्य दिया जाता है। अगले दिन रंगों का पर्व उत्साह से मनाया जाता है।

प्रह्लाद बनकर धर्म की रक्षा करें

रंगभरा मौज-मस्ती का लोकप्रिय त्योहार होली है, जिसे वैदिक यज्ञ भी कहा जाता है। प्राचीनकाल में वर्षभर यज्ञ अनुष्ठान चलते थे, जिनका प्रयोजन आनंद और उल्लासमय वातावरण की सृष्टि करना होता था। होलिका दहन इसी परंपरा का संवाहक वैदिक यज्ञ है।

होलिका की कथा- होलिका दहन की प्रचलित कथा सभी जानते हैं कि प्रह्लाद की धर्मवृत्ति के कारण पिता हिरण्यकशिप ने अपनी बहन होलिका को, जिसे अग्नि का वरदान पाप्त था, अग्नि में प्रह्लाद को गोद में लेकर बैठने को कहा, जिससे प्रह्लाद जल जाए और होलिका बच जाए, किंतु प्रभु तो सर्वत्र भक्त के रक्षक हैं, वे भला धर्मरक्षक प्रह्लाद को जल जाने कैसे देते? भक्त प्रह्लाद बच गए और होलिका जल गई।

एकता के प्रतीक पर्व- होली एकता का प्रतीक पर्व है, जहां वर्ण, जाति को भुलाकर राजा-रंक सभी त्योहार की धूम में मस्त हो जाते हैं। जैसे नीला, पीला, लाल और गुलाबी, सभी रंग एक साथ मिलकर एक नए रंग में बदल जाते हैं, जो किसी विशेष रंग का परिचायक नहीं होता। किंतु कुछ लोग रंगों में कीचड़, तेजाब मिला देते हैं। ऐसी परिस्थिति में ही तो धर्म की रक्षा के लिए प्रह्लाद समान भक्त को जन्म लेना पड़ता है।

संसार में जब द्वेष की होली जलेगी,
तब हमें प्रह्लाद तो होना ही पड़ेगा,
जानते तो झूठ कब तक जी सकेगा,
सत्य के आधार पर जब तक रहेगा।
अन्याय की सीमा अभी पूरी हुई है,
अब उन्हें अभिमान खोना ही पड़ेगा।

धर्म की रक्षा- इससे हमें दृष्टि मिलती है, जब अन्याय सीमा लांघ जाता है, तब विरोध का स्वर फूट पड़ता है। यह फूट का स्वर पहले घर में ही उठता है, तभी हिरण्यकशिप के घर में धर्म का विरोध हुआ। ईश्वरीय सत्ता का खंडन किया गया। स्वयं को भगवान कहने वाले हिरण्यकशिप के घर खंभे से प्रकट हो प्रभु ने नृसिंह अवतार ले अधर्मी हिरण्यकशिप का वध कर धर्मस्वरूप भक्त बालक की रक्षा की। अन्याय-अत्याचार से प्रजा को मुत किया। आज भी हमें इतिहास से सीख लेनी होगी। समाज को बचाने के लिए प्रत्येक बालक को प्रह्लाद बनना होगा, तभी देश तथा धर्म की रक्षा संभव है।

पर्व का संदेश- संसार धर्म की राह पर चलते-चलते धर्ममय हो जाए, सारे जातीय भेदभाव समाप्त हो जाएं, तो विभिन्नता में एकता स्थापित करने वाली हमारी संस्कृति स्वयं रक्षित हो जाएगी। हमें अपनी संस्कृति की मौलिकता को जानना-समझना होगा, तभी हम जनजीवन को उसका परिचय दे सकेंगे। प्रत्येक पर्व में अर्थ भरा हुआ है, जो हमें जीवन जीने की सीख देता है।

सूरत। सूरत में संत श्री खेतेश्वर पैदल यात्रा संघ द्वारा मासिक पूर्णिमा यात्रा निकाली गई जिसमें सेकड़ो की संख्या में भक्तजनों ने भाग लिया आज होलिका दहन के पावन पर्व पर मंदिर परिसर में सबने गुरुमहाराज संत श्री तुलसारामजी महाराज के समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त करने का जो सन्देश दिया उसका सबको पालन करने का संकल्प लिया आज की ये 26वि यात्रा में आरती के लाभार्थी श्री प्रकाश सिंह सुपुत्र श्री तेजसिंह जी साकरणा ने आरती कर दाता का आशीर्वाद लिया अन्त में यात्रा संघ के संयोजक श्री महेंद्रसिंह राजपुरोहित ने सभी का आभार प्रकट किया

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

सूरत। शहर के डिंडोली सीआर पाटिल रोड ओवर ब्रिज के नीचे से मुम्बई की ओर जाने वाली रेलवे लाइन पर किसी ट्रेन की चपेट में आने से लिंबायत के संजयनगर के रहने वाले युवक की मौत हो गई।

घटना के संदर्भ में डिंडोली पुलिस सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार लिंबायत, संजयनगर के पास आस्तिक नगर सोसाइटी घर नं. 120 में रहने वाले तुकाराम उर्फ अंकुश रामदेव सोनकुसरे (27 वर्ष) बुधवार को रात 8 बजे के करीब सीआर पाटिल रोड ओवर ब्रिज के नीचे से जा रहे थे। उसी समय सूरत से मुंबई की लाइन पर किसी ट्रेन की चपेट में आ जाने से स्थल पर ही मौत हो गई। पुलिस लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल में भेजकर आगे की जांच कर रही है।

गुणानुवाद सभा

सूरत। शहर के नानपुरा बालूनिवास के उपाध्याय में प.पू. पद्मदर्शन महारज द्वारा प्रेम सुरीश्वरजी महाराज के गुणानुवाद की सभा आयोजित की गई। जिसमें भारी संख्या में भक्तगण लाभान्वित हुए।

दरवाजा ऊपर गिरने से बच्ची की मौत

सूरत। सचिन पलसाणा हाइवे पर स्थित राधिका होटल के पास नई बिल्डिंग बन रही है। जहां पर खेल रही बच्ची के ऊपर अचानक दरवाजा गिरने से उसकी मौत हो गई।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सचिन पलसाणा रोड पर नई बिल्डिंग का निर्माण हो रहा है। वहां पर अर्जुन (ओलपाड, मलगांव) अपनी पत्नी के साथ काम करते हैं। गत रोज दोपहर के समय अर्जुन और उसकी पत्नी काम कर रहे थे और उनकी 7 साल की बच्ची राधी पास में ही खेल रही थी। उसी दौरान वहां पर रखा गया दरवाजा बच्ची के ऊपर गिर गया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। पिता अर्जुनभाई बच्ची को लेकर इलाज के लिए 108 के द्वारा सिविल अस्पताल में ले गए। जहां पर चिकित्सक ने मासूम राधी को मृत घोषित कर दिया। सचिन पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सूरत। समपूर्ण शहर के साथ शहर के पिपलोद स्थित स्टार्स कॉलेज में दुलेटी की पूर्व संध्या पर विद्यार्तियों द्वारा रंगोत्सव का आयोजन किया गया। विभिन्न रंगों में विद्यार्थी दिखाई दे रहे है। साथ ही बी आर सी एम कॉलेज आठवा लाइन्स के विद्यार्थियों ने भी रंगोत्सव मना कर रंगों में सराबोर दिखाई दिए।

सोनगढ़ से नकली नोट छापने का कारखाना पकड़ाया, 2 गिरफ्तार

पिछले काफी समय से स्केन करके बनाई जाती थी करेन्सी

सूरत। तापी पुलिस ने गश्त के दौरान सोनगढ़ क्षेत्र से नोट छापने का कारखाना पकड़ने में सफलता पाई है। स्केन करके छापी गई 100 रुपए की नकली नोट के साथ पुलिस ने आरोपी को भी गिरफ्तार कर लिया। साथ ही उसके पास से 974 नकली नोट कब्जे में लेकर पुलिस आगे की जांच कर रही है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सोनगढ़ के नकली नोट के कारोबार का मुख्य सूत्रधार सुनमन रमता गामित (आनंदपुर निशाल फलिया), पांखरी बंगला फलिया में रहने वाले अपने मित्र गणेश गीबिया गामित, विपुल सोमाभाई गामित के साथ मिलकर अपने घर पर नोट छापता था। जिसकी भनक पुलिस को लग गई और इनके घर पहुंचकर जांच की तो वहां से स्केनर, प्रिंटर, कैची तथा 100 रु. की 974 बनावटी नोट मिली। पुलिस द्वारा पूछताछ करने पर आरोपियों ने बताया कि पिछले एक महीने से यह काम हो रहा था। पुलिस ने स्थल से माल-सामान कब्जे में लेकर गणेश गीबियाभाई गामित और विपुल सोमाभाई गामित को गिरफ्तार करके आगे की जांच शुरू की है।

लालगेट के किशोर ने लगाई फांसी

सूरत। शहर के लालगेट विस्तार में 17 वर्षीय किशोर ने किसी कारणों से घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार लालगेट विस्तार के धास्तीपुरा वरीयाली बाजार शांति भवन सानिया फ्फ्लैट के सामने घर नं,11/2166 में रहने वाले भरतभाई फूलचंद सोनी के बेटे विष्णु (17 वर्ष) ने बुधवार की रात 1 बजे किसी कारणों से पंखे में लगे हुक के साथ कपड़ा बांधकर फांसी पर झूल गए। घटना की जानकारी पुलिस को देते ही लालगेट पुलिस स्थल पर पहुंच गई और मृतक विष्णु की लाश को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल में में भेजकर आगे की जांच कर रही है।

ऑर्गेनिक खेती द्वारा किसान अधिक उत्पादन कर सकते है: पी के घेवरिया

सूरत। राज्य सरका की खेतीवाड़ी विभाग द्वारा सूरत जिला की महुवा तहसील के वाछावड़ गांव में सेन्द्रिय खेती पद्धति से उत्पादन करने के लिए कृषि विशेषज्ञ पी. के. के मार्ग दर्शन दिया। इससे किसान अधिक उत्पादन कर सकते है।

डिंडोली की युवती ने जहर गटक कर की आत्महत्या

सूरत। डिंडोली की गोकुलधाम सोसाइटी की रहने वाली युवती चूहा मारने की दवा पी ली जिसे इलाज के लिए अस्पताल में ले जाया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। डिंडोली पुलिस आत्महत्या का मामला दर्ज करके जांच कर रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार डिंडोली के गोकुलधाम सोसाइटी जी-1/402 में रहने वाले महेन्द्रभाई पटेल की बेटी हेतनबेन (24 वर्ष) ने गत रोज देर रात 11 बजे के करीब किसी कारणों से चूहा मारने की दवा पी ली थीं। जिनको इलाज के सर्व प्रथम डिंडोली की बाबा मेमोरियल अस्पताल में इलाज देने के बाद गहन इलाज के लिए युनिक अस्पताल में ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने हेतन को मृत घोषित कर दिया। घटना के बारे में डिंडोली पुलिस आत्महत्या का मामला दर्ज करके आगे की जांच कर रही है।

नि:शुल्क आयुर्वेदिक निदान कैम्प

सूरत। कामरेज तहसील के आस्ता गांव में जिला पंचायत आयुर्वेद दवाखाना द्वारा वाव गांव की गुजराती पाठशाला में नि:शुल्क निदान एवं उपचार हेतु एक कैम्प का आयोजन किया गया। जिसका दीप प्रज्जवलन कर श्री गणेश किया गया।

भारी उत्साह और धार्मिक आस्था के साथ राज्यभर में होली का त्यौहार मनाया गया

पूर्णिमा की तिथि हो, प्रदोष काल हो और भद्रा नहीं लगा हो ऐसे तीन संयोग का अनोखा समन्वय होने पर इस बार की होली बहुत ही शुभ

सूरत, असत्य पर सत्य और आसुरी शक्ति पर देवी शक्ति की जीत का त्यौहार ऐसा होली के त्यौहार को गुरुवार को अहमदाबाद शहर सहित राज्यभर में भारी उत्साह और धार्मिक आस्था के साथ राज्यभर में होली का त्यौहार मनाया गया था। छोटे बच्चों से लेकर युवाओं होली के त्यौहार को मनाते है दूसरी तरफ गुरुवार को पूर्णिमा होने की वजह से शाम के समय में होलिका दहन और होली की प्रदक्षिणा करके लोगों ने धार्मिक आस्था को परंपरागत तरीके से मनाया था। प्रसिद्ध जगन्नाथजी मंदिर में आज होली त्यौहार मनाया गया था। इसी प्रकार से शहर के अन्य मंदिरों में भी रसियागान, फूलफाग महोत्सव सहित के त्यौहार मनाये गये थे। दूसरी तरफ, डाकोर, द्वारका, शामलाजी, अंबाजी सहित के तीर्थधामों में तो आज पूर्णिमा और होली को लेकर भारी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे थे। धर्मसिंधु नाम के ग्रंथ अनुसार, होलिका दहन के लिए तीन चीज एक साथ होना काफी शुभ माना जाता है। पूर्णिमा की तिथि हो, प्रदोष काल हो और भद्रा नहीं लगा हो। इस वर्ष में होली के आज के दिन शाम के समय यह तीन संयोग का अनोखा समन्वय हुआ था।होली का त्यौहार दो दिन का होता है। पहले दिन होली के दिन होलिका दहन किया जाता है और दूसरे दिन में धुलेटी का त्यौहार रंग के साथ मनाया जाता है। शास्त्रों के अनुसार, होलिका दहन फाल्गुन मास की पूर्णिमा को किया जाता है। गुरुवार को सुबह में ८.५८ मिनट से पूर्णिमा की तिथि है और इसके साथ भद्रा भी लागू हो गया था लेकिन नियम है कि, भद्रा काल में होलिका दहन नहीं करना चाहिए, यह शुभ नहीं माना जाता है। हालांकि शाम को ७.३७ मिनट पर भद्रा समाप्त हो गया था और इसके बाद होलिका दहन को लेकर बहुत शुभ असर प्राप्त होने की संभावना बढ़ जाती है। होली के आज के पवित्र दिन के साथ ही होली मनाया गया था।

पॉलिस्टर के यार्न में 3 रुपए की वृद्धि

फ्रन्ट और सेकन्ड लाइन स्पीनर्स द्वारा सिन्डिकेट यथावत् रख यार्न की कीमत में की गई वृद्धि

सूरत। फ्रंट और सेकन्ड लाइन स्पीनर्स द्वारा सिन्डिकेट यथावत् रखकर की गई यार्न की वृद्धि जारी है। अगस्त से लगातार की जा रही भाव वृद्धि सातवें महीने भी जारी रही। बुधवार को जारी की गई कीमत के अनुसार यार्न तैयार करने के पीओपी की कीमत में 1 रुपए से 3 रुपए तक की वृद्धि की गई है। जिसके कारण पीटीवाई यार्न में 2 से 3 रुपए जबकि फिलामेंट यार्न की कीमत में 1 से 3 रुपए की वृद्धि हुई है। पॉलिस्टर यार्न की कीमत में पिछले सात माह प्रति किलो 50 रुपए तक की बढ़ोत्तरी हो चुकी है। जबकि एक तरफ स्थानीय टेक्सटाइल मार्केट के उत्पादक नई टैक्स स्लेब सिस्टम से जूझ रहे हैं।

इस बार ग्रीष्म की गर्मी ज्यादा परेशान करेगी : मई से हीटवेव की शुरूआत

सूरत, इंडियन मेट्रोलोजिकल डिपार्टमेन्ट (आईएमडी) द्वारा जारी किए गए सीजनल फोरकास्ट रिपोर्ट में स्पष्ट संभावना व्यक्त की गई है कि, इस बार ग्रीष्म की गर्मी लोगों को ज्यादा परेशान करेगी। मई महीने में देश के कई राज्यों में गर्मी का सबसे ज्यादा प्रभाव देखन को मिलेगा।

हीटवेव पहुंचेगा। आईएमडी के रिपोर्ट में जो राज्य हिटवेव जोन के तहत जारी किया गया है, इसमें गुजरात राज्य भी शामिल है, इसी वजह से गुजरात के लोगों को भी इस बार ग्रीष्म की गर्मी हरबार की अपेक्षा ज्यादा प्रभाव बताये ऐसी संभावना है। आईएमडी के सीजनल फोरकास्ट रिपोर्ट में स्पष्ट संभावना व्यक्त की गई है कि, देश में गर्मी का सबसे ज्यादा प्रभाव उत्तर भारत के राज्यों में देखने को मिलेगा।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **Tc.No. : GUJHIN00722**, E-mail: krantisamay@gmail.com